30 JANUARY

030-336 • WK. 05

THURSDAY

JAN 2020

M	T	W	T	F	S	S
		1	2	3	4	5
6	7	8	9	10	11	12
13	14	15	16	17	18	19
20	21	22	23	24	25	26
27	28	29	30	31		

गणपति - पूजा.

(B.A. IInd sem.)

By: Girijesh Tripathi,
(Astt. Prof., A.I.H., K.K.C.)

→ ऐतिहासिक दृष्टि से विकास सिद्धान्त के अनुसार प्रायः सभी पौराणिक देवताओं का मूलरूप (Origin) वेदों में मिलता है। गणेश का भी मूल वेदों में ही है।

→ गणेश का वेदों में नाम गणेश न होकर 'ब्रह्मणस्पति' है। वेदों के अनेक सूक्तों में 'ब्रह्मणस्पति' (Brahmanaspati) का उल्लेख है। बाद में इन्हीं का पुराणों में उल्लेख 'गणेश' के नाम से है।

→ ऋग्वेद के द्वितीय मण्डल का एक सुप्रसिद्ध मन्त्र गणपति की स्तुति में है जो आज भी किसी शुभ कार्य के प्रारम्भ होने में आवाहन के लिए प्रयोग किया जाता है।

→ "गणानां त्वा गणपतिं हवामहे
कविं कवीनां उपमश्रवस्तमम्।
ज्येष्ठराजं ब्रह्मणां ब्रह्मणस्पत आ
नः शृण्वन्नूतिभिः सीद सादनम्।" 2020

— ऋग्वेद, II मण्डल.

Scanned with CamScanner

इस मन्त्र में गणपति अथवा गणेश को 'ब्रह्मणस्पति' कहा गया है। ब्रह्मण का अर्थ वाक् अर्थात् वाणी भी है। अतः ब्रह्मणस्पति का अर्थ वाक्पति - वाचस्पति - वाणी का स्वामी हुआ। बृहदारण्यक उपनिषद में भी इसी अर्थ को बताया गया है।

→ गणपति के लिए 'ज्येष्ठराज' शब्द का प्रयोग भी मिलता है। अर्थात् देवताओं में सबसे पहले उत्पन्न होने वाले।

→ गणेश के जिस विशिष्ट रूप का वर्णन पुराणों में मिलता है। उसका आभास वैदिक ऋचाओं में ~~रूप~~ स्पष्ट रीति से मिलता है।

→ गणपति को 'महाहस्ती', 'एकदन्त', 'वक्रतुण्ड', तथा दन्ती कहा गया है। 'गणपतितत्वरत्नम्' में गणपति के वैदिक स्वरूप का वर्णन किया गया है।

→ गणपति शब्द का अर्थ है — गणों का पति अर्थात् स्वामी (राजा) इसी अर्थ में इन्हें गणों के ईश अर्थात् गणेश कहा गया है। यहां 'गण' का अर्थ है — देवताओं का समूह

→ गणपति का मुख हाथी के आकार का है इसलिए इन्हें गजानन, गजास्य, सिन्धुरानन आदि नामों से भी जाना जाता है।

Scanned with CamScanner

→ गणेश जी सकल अंग एक प्रकार का नहीं है। मुख है गज का, परन्तु कण्ठ के नीचे का भाग मनुष्य का है। अर्थात् इनके देह में नर तथा गज का अनुपम सम्मिलन है।

→ 'गज' साक्षात् ब्रह्म को कहते हैं। 'समाधि' (ध्यान की प्रगाढ़ अवस्था) के द्वारा योगीजन जिसके पास पहुंचते हैं अर्थात् जिसे प्राप्त करते हैं वह 'ग' है। तथा जिससे यह जगत् उत्पन्न होता है वह 'ज' है। 'ज' धातु (क्रिया) का अर्थ है जन्म लेना। अर्थात् विश्व की उत्पत्ति जिस ब्रह्म से होती है वह गज है।

→ गणेश का ऊपरी भाग 'गजाकृति' है अर्थात् निरुपाधि ब्रह्म है जबकि निचला भाग नर का अर्थात् 'सोपाधि ब्रह्म' का है (माया से ढका हुआ ब्रह्म ही जीव अर्थात् नर है)

→ गणेश जी 'एकदन्त' कहे जाते हैं। उनका दाहिना

02 SUNDAY

दाँत ही विद्यमान है। पुराणों में उनके बांए दाँत के टूटने की कथा मिलती है। अतः उन्हें 'भग्नरद' भी कहा जाता है। 'एक' शब्द यहाँ 'माया' का द्योतक (Representative) है। जबकि 'दन्त'

शब्द सत्ताधारक मायाचालक ब्रह्म का द्योतक है। अर्थात् गणपति साक्षात् सृष्टि के लिए माया की प्रेरणा करने वाले जगत् के आधार 'ब्रह्म' के ही प्रथम अभिव्यक्त रूप हैं।

→ गणेश का दूसरा नाम 'वक्रतुण्ड' है। गणेश के कण्ठ के नीचे का भाग जगत् है और ऊपर का अंश आत्मा है। आत्मा जगत की भांति सरल अनुभवगम्य नहीं है, वह जगत् से भिन्न है, पृथक है, टेढ़ा है अर्थात् वक्र है, इसलिए ब्रह्मस्वरूप गणेश का ऊपरी भाग (मस्तक) अर्थात् 'तुण्ड' वक्र या टेढ़ा होने से उनका नाम 'वक्रतुण्ड' है।

→ सृष्टि के आदि अर्थात् प्रारम्भ में जगत् के सृष्टा तथा अन्तकाल में पूरे विश्व को अपने उदर में वास करने/प्रतिष्ठित कराने वाले जगन्नियन्ता गणेश का 'लम्बोदर' नाम उपयुक्त है।

→ गणेश 'शूर्पकर्ण' हैं। अर्थात् उनके कर्ण (कान) शूर्प (सूप) की तरह हैं। जिसप्रकार सूप अनाज को भूसे से अलग कर उसे उसके शुद्धरूप में सामने लाता है, उसी प्रकार शूर्पकर्ण ब्रह्म को शुद्धरूप में स्थापित करता है।

→ पुराणों में गणेश का चतुर्भुज रूप वर्णित है।

Scanned with CamScanner

→ गणेश पूजा का प्रसार-प्रचार भारत के कोने-कोने में तो है ही साथ ही साथ पड़ोसी देशों – जावा, सुमात्रा, श्रीलंका, चीन, जापान, कम्बोडिया, नेपाल आदि देशों में भी।

→ गणेश की भौतिक (Physical) रूप के बारे में पुराणों में व्यापक चर्चा है। पुराणों के अतिरिक्त भी पर्याप्त चर्चा गणेश के भौतिक स्वरूप के बारे में अन्य स्रोतों ~~स्रो~~ से भी मिलती है।

→ श्रीमती ए. गेट्टी ने गणेश पर एक सुन्दर पुस्तक लिखी है, जो सन 1936 में ~~आ~~ Oxford University Press से प्रकाशित हुई।

→ भारत में प्रायः गणेश की एक सिर वाली मूर्ति मिलती है, जबकि नेपाल में 'हेरम्ब' गणेश की मूर्तियों में पांच सिर पाए जाते हैं।

→ गणेश के साधारणतया दो ही नेत्र (eyes) दिखलाए जाते हैं परन्तु तान्त्रिक पूजा में उनके तीन नेत्र पाए जाते हैं।

→ वैसे तो गणेश-पूजन आदिकाल से सनातन धर्म से जुड़ा है। प्राचीनकाल में गणपति का एक विशिष्ट उपासक सम्प्रदाय था, जो गाणपत्य के नाम से जाना जाता था। गाणपत्य सम्प्रदाय तान्त्रिक था, जिसमें

Scanned with CamScanner

भिन्न-भिन्न रूप में गणपति की पूजा की जाती थी।
इनमें 6 भिन्न भिन्न सम्प्रदाय थे। इनमें 'महागणपति' 'हरिद्रा गणपति', 'उच्छिष्ट गणपति', 'उर्ध्व गणपति', पिङ्गल गणपति तथा 'लक्ष्मी गणपति' की पूजा की जाती थी।

→ वैदिक सनातन धर्म के साथ-साथ बौद्ध धर्म में भी गणपति का बहुत महत्व है। महायान के तान्त्रिक सम्प्रदायों (वज्रयान, तंत्रयान) में गणेश के विनायक रूप की आराधना की गई। बुद्ध का एक नाम 'विनायक' भी है।

→ नेपाल में बौद्ध धर्म के साथ-साथ गणपति की पूजा भी चलती है। यहां से खोतान, चीनी, तुर्किस्तान तथा तिब्बत में भी गणेश की उपासना का प्रचार हुआ।

→ इन देशों में विनायक की नृत्यशालिनी मूर्ति का प्रचलन है।

→ गणपति को तमिलनाडु में - पिल्लैयर
बर्मा में - महापियेन्दे
मंगोलिया में - त्वोतखारुन खागान
कम्बोडिया में - प्रह केनोज
चीन में - कुआन-शी-तिएन
जापान में - काङ्गी तेन कहा जाता है।

2020

Scanned with CamScanner

06 FEBRUARY

037-329 • WK 06

THURSDAY

FEB 2020	M	T	W	T	F	S	S
						1	2
	3	4	5	6	7	8	9
	10	11	12	13	14	15	16
	17	18	19	20	21	22	23
	24	25	26	27	28	29	

8 → जावा (इन्डोनेशिया) में गणेश का विशेष स्थान-

9 → भारत में महाराष्ट्र में विशेष रूप से गणेश-

10 पूजा का प्रचलन है। पेशवा काल में यह अत्यधिक

11 लोकप्रिय था। आधुनिक काल में बालगंगाधर तिलक ने

अभियान चलाकर गणेश पूजा को घर-घर में प्रचलित

12 कर दिया।

1

2

3

4

5

6

7

Scanned with CamScanner